(स्नातक अंतिम वर्ष प्रतिष्ठा के विद्यार्थियों के लिए)

विषय – राजनीति विज्ञान, पत्र : VIII
विषयवस्तु – प्रमुख धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन
द्वारा :– सिद्धू कुमारी
सहायक प्राध्यापक
जगजीवन महाविद्यालय, आरा

19वीं शदी में हुए कुछ प्रमुख सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :–

हिन्दू धर्म सुधार आंदोलन

	नाम	संस्थापक	वर्ष	स्थान
पूर्वी क्षेत्र के संगठन	आत्मिय सभा	राजा राम मोहन राय	1815	कलकत्ता
	यंग बंगाल आंदोलन	हेनरी विवियन डिराजियो	1826	कलकत्ता
	ब्रह्म समाज	राजा राममोहन राय	1828	कलकत्ता
	धर्म सभा	राधा कान्त देव	1830	कलकत्ता
	तत्वबोधिनी सभा	देबेन्द्रनाथ टैगार	1839	कलकत्ता
	साधारण ब्रह्म समाज	आन्नद मोहन बोस	1878	कलकत्ता
पश्चिमी क्षेत्र के संगठन	प्रार्थना समाज	डॉ. आत्माराम पांडुंग	1867	बाम्बे
	स्टुडेंट्स लिटरली एण्ड साइंटिफिक सोसायटी	दादाभाई नौरोजी	1848	बाम्बे
	परमहंस मण्डली	दादोबा पांडुरंग	1849	बाम्बे
	सत्यशोधक समाज	ज्योतिबा फूले	1873	पूना
	डेक्कन एडुकेशन सोसायटी	जी. जी. अगरकर	1884	पूना
	भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक संगठन	एम. जी. रानाडे	1887	बाम्बे
	पुने सेवा सदन	पंडिता रामाबाई, जी. के. देवधर	1909	पूने
	विडॉव रिमेरिज एसोसिएशन	विष्णु शास्त्री पंडित	1850	
	सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डियन सोसायटी	गोपाल कृष्ण गांखले	1905	बाम्बे
	देव समाज	शिवनारायण अग्निहोत्री	1887	लाहौर

दक्षिणी क्षेत्र के संगठन	श्री नारायण धर्म पारीपालना सभा	श्री नारायण गुरू	1903	केरल
	डर्विडियन आंदोलन	पेरियार		तामिलनाडु
	जस्टिस मूवमेंट	डॉ. सी नातिसा मुदलियार	1916	म्द्रास
	सेल्फ रेस्पेक्ट मूवमेंट	पेरियार	1925	तामिलनाडु
	टेंपल इन्ट्री मूवमेंट		1931	केरल

भारतीय क्षेत्र में फैले हुए संगठन	थियोसोफिकल सोसायटी	मैडम ब्लावस्तस्की, कर्नल आल्कट	1875	न्यू यार्क
	राम कृष्ण मिशन	स्वामी विवेकानंद	1897	बेलूर
	आर्य समाज	स्वामी दयानंद सरस्वती	1875	बाम्बे

मुस्लिम सुधार आंदोलन :–

अलीगढ़ आंदोलन	सर सैयद अहमद खान	1875	अलीगढ़
अहमदिया आंदोलन	मिर्जा गुलाम अहमद	1889	लाहौर
देवबंद आंदोलन	मुहम्मद कासिम नानौतवी	1866	देवबंद
वहाबी आंदोलन	सैयद अहमद	1820	रायबरैली

सिख सुधार आंदोलन :–

सिंह सभा	खेम सिंह बेदी	1870	अमृतसर
अकाली आंदोलन	करतार सिंह	1920	पंजाब

पारसी सुधार आंदोलन :–

रहनुमाईमजध्यान सभा	दादाभाई नैरोजी	1851	बाम्बे
सेवा सदन	बहरामजी एम. मालबारी	1885	बाम्बे

19वीं सदी में लगभग पूरे भारत में धर्म सुधार आंदोलन शुरू हो चुके थे। ज्यादातर हिन्दू धर्म सुधार संगठनों की प्रकृति सुधारात्मक थी, जो धर्म की तथाकथित ब्राह्णवादी व्याख्या की आलोचना कर रहे थे, धर्म की रूढ़ीवादीता और शोषणकारी तत्वों को दूर कर सबके लिए एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना करना चाहते थे। इनमें निम्नलिखित समानता देखी जा सकती है –

1. जाति प्रथा का विरोध

2. ब्राह्मन वाद का विरोध

3. धार्मिक कर्मकाण्ड, मूर्ति पूजा, बहुदेववाद का विरोध

4. स्त्री शिक्षा के समर्थक

5. विधवा पुर्नविवाह के समर्थक

6. बाल विवाह और बालिका शिशु हत्या का विरोध

7. वैदिक संस्कृति और सभ्यता के समर्थक

8. शिक्षा को जनउत्थान का साधन मानते थे।

हिन्दू संगठनों से अलग मुस्लिम और सिख संगठनों का मुख्य उद्देश्य केवल अपने धर्म की रक्षा करने, उसे बढ़ावा देने और अपने धर्म के लोंगों के बीच एकता कायम करना था। हालांकि पारसी धर्म में धार्मिक और सामाजिक बुराईयों को दूर करने की कोशिश की जा रही थी। हिन्दू संगठनों में भी धर्म सभा जैसे संगठनों का निर्माण बाद में हुआ जो धार्मिक यथास्थितिवाद को कायम रखने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रहे थे।